शुभ सूरज कुल-कलस नृपात दशरथ भये भूपति।
तिनके सुत भये चारि चतुर चित चारु मति॥
रामचन्द्र भुवचन्द्र भरत भारत भुव भूषण।
लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न दीह दानवदल-दूषण ॥22॥

शब्दार्थ—सूरज-कुल-कलस = सूर्यवंश में शिरोमणि। चारु = सुन्दर। चारु मति = शुद्ध बुद्धि वाले। भुवचन्द्र = पृथ्वी के चन्द्रमा। भारत भुव भूषण = भारत भूमि के भूषण; अर्थात् भारत भूमि की शोभा को बढ़ाने वाले। दीह = दीर्घ, भयानक। दानव-दल-दूषण = राक्षसों के समूह का नाश करने वाले।

प्रसंग—इन पंक्तियों में कवि ने दशरथ और उनके चारों पुत्रों का परिचय दिया है।

व्याख्या भाग

व्याख्या—उच्च सूर्यवंश के शिरोमणि महाराज दशरथ के चतुर, सहृदय और अच्छी बुद्धि वाले राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न चार पुत्र हुए। राम पृथ्वी के चन्द्रमा के समान सबको शीतलता प्रदान करने वाले थे, भरत अपने जन्म से भारत भूमि की शोभा बढ़ाने वाले थे और लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न भयंकर राक्षसों के समूह का नाश करने-वाले थे।

अलंकार—अनुप्रास, रूपक।